

श्री खोले के हनुमान जी

संक्षिप्त विवरण

जयपुर तीर्थस्थल व मंदिरों की नगरी के रूप में लघु काशी कहलाता है अरावली पहाड़ी श्रृंखला में गलता तीर्थ के उत्तर में लक्ष्मण डूंगरी के पीछे पहाड़ियों में लगभग 325 वर्ष पूर्व निवास कर रहे संत शिरोमणि श्री न र व र दास जी महाराज जिन्हें निर्मल दास जी भी बोलते थे ने पहाड़ी पर अपनी तपस्या के दौरान अपनी ही कल्पनानुसार पश्चिमी मुखी शयन मुद्रा में श्रीहनुमान जी महाराज की आकृति का अंकन किया और वहीं अंकन आज भी साकार रूप में है। सन् 1961 में वर्षाकाल में तुलसी जयन्ति के दिन श्री राधेलाल चौबे जी महाराज अपने साथियों के साथ जयपुर वाटर सप्लाई स्कीम, जो कि पानी की टंकियों के नाम से प्रसिद्ध है, पर भ्रमण के लिए आए थे और उन्होंने टंकी पर से पूर्व की ओर की पहाड़ी पर लालिमा का दर्शन होने पर इस आखेट क्षेत्र में साथियों सहित पहाड़ी से नीचे उतरकर इस लालिमा के पास पहुंचे और उस पहाड़ी क्षेत्र की सफाई करने पर श्रीहनुमान जी महाराज की बनी हुई आकृति के दर्शन होने पर प्रथम सिंदूर का चौला चढ़ाया। श्री चौबे जी महाराज के अथक प्रयास और अद्भुत संगठनात्मक शक्ति से जयपुर के स्थानीय निवासियों को दर्शन की प्रेरणा देकर आमंत्रित किया। ये क्षेत्र पूरी तरह से आखेट क्षेत्र था और सभी प्रकार के पशु-पक्षी यहां निवास करते थे और अब भी कर रहे हैं। मंदिर आने के लिए दिल्ली बाईपास से लेकर मंदिर तक पानी की टंकी के उत्तर की ओर पहाड़ी के साथ-साथ पैदल आने को पगड़ंडी का रास्ता बनाया।

मंदिर का विकास निरंतर होता रहा है श्री चौबे जी महाराज के प्रयास से राजस्थान की यशस्वी मुख्यमंत्री श्रीमती वसुन्धरा राजे ने सन् 2003-08 के कार्यकाल में 17 करोड़ रूपया पर्यावरण विकास के कार्यक्रम के अन्तर्गत निर्माण कार्य के लिए स्वीकृत किया। निर्माण कार्य जयपुर विकास प्राधिकरण के द्वारा दोनो ओर सड़क, छतरियां, रसोई स्थल व पार्किंग स्थल का निर्माण कराया गया। इसी क्रम में सन् 2013-18 के कार्यकाल में माननीया श्रीमती वसुन्धरा राजे जी ने 10 करोड़ रूपया और स्वीकृत कर पार्किंग स्थल पर 10 रसोई घर और 10 बड़े कक्ष तथा 2 लाख लीटर पानी की क्षमता की ओवरहैड वॉटर टैंक का निर्माण कराया। वर्तमान में मंदिर परिसर में 11 शिवालय, जय सियारामजी महाराज का मंदिर, वेद भगवान, गायत्रीमाता, द्वादश ज्योतिर्लिंग शिवालय, वैष्णों माता, अन्नपूर्णा माता आदि के मंदिर स्थापित हैं। हजारों की संख्या में स्थानीय दर्शनार्थियों के साथ-साथ देश के विभिन्न प्रान्तों के दर्शनार्थी और विदेशी पर्यटक प्रतिदिन आते हैं।

मंदिर व्यवस्था के लिए 1961 में गठित श्री न र व र आश्रम सेवा समिति पंजीकृत संस्था है और सन् 2015 में सार्वजनिक प्रन्यास एक्ट के अन्तर्गत न्यास के रूप में पंजीकृत है। मंदिर का संचालन समिति के द्वारा किया जाता आ रहा है और प्रतिवर्ष प्रजातांत्रिक विधि से प्रति तीन वर्ष में अध्यक्ष का चुनाव होता है। श्री चौबे जी महाराज के जनवरी 2010 में ब्रह्मलीन होने के पश्चात वर्ष 2010 से ही अध्यक्ष के पद पर निर्वाचित होकर श्री गिरधारी लाल शर्मा अपनी कार्यकारिणी के साथ निरन्तर कार्य कर रहे हैं।